हिंदी दैनिक

न्यूज़ वायरस

वर्ष : 12 अंक : 184 | देहरादून, शनिवार, 13 जनवरी, 2024 | मूल्य : एक रुपया | पृष्ठ : 08

अक्षत वितरण टोली ने निमंत्रण पत्रक मुख्यमंत्री धामी को भेंट किये

3

देवभूमि में 14 से 22 जनवरी तक होंगे सांस्कृतिक उत्सव

जन सहभागिता से जुड़ेगा रामलला प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सचिवालय से सभी जिलाधिकारियों के साथ वर्चुअल बैठक कर निर्देश दिये कि आगामी 14 से 22 जनवरी 2024 तक सांस्कृतिक उत्सव के तहत प्रदेश में भव्य आयोजन किये जाएं। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। इसके उपलक्ष्य में प्रदेश में पूरी जन सहभागिता के साथ भव्य कार्यक्रम आयोजित किये जाएं।

22 जनवरी को सभी प्रमुख मंदिरों, गुरुद्वारों में होगा प्रसाद वितरण

22 जनवरी को राज्य में रहेगा ड्राई डे, मुख्यमंत्री ने दिये निर्देश

मुख्यमंत्री ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों पर चलकर हमें देवभूमि की सेवा करने का जो अवसर मिला है उस अवसर को हम अपने "विकल्प रहित संकल्प" के साथ पूरा करने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। हमें उत्तराखंड को देश का सर्वोत्तम राज्य बनाना है। आगामी 22 जनवरी को रामलला अयोध्या में विराजमान होने जा रहे हैं और यह ऐसा अवसर है, जिसके लिए हमने वर्षों इंतजार किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक सौ चालीस करोड़ देशवासियों को रामोत्सव मनाने का सुअवसर प्रदान किया है। भगवान श्री राम के प्राण प्रतिष्ठा के इस भव्य आयोजन को प्रदेश में दिव्य एवं गरिमा के साथ आयोजित किये जाने में सभी को सहयोगी बनना होगा।

मुख्यमंत्री ने जनपदों में मंदिरों, घाटों, प्रतिष्ठानों, शहरों में बड़े स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाया जाए। सभी जिलाधिकारी यह सुनिश्चित करें कि यह कार्यक्रम केवल सरकारी कार्यक्रम तक सीमित न रहे। इसमें महिला मंगल दल, युवक मंगल दल स्वयं सहायता समूहों, सामाजिक संगठनों और आम जन की सहभागिता से दीपोत्सव, रामचरितमानस पाठ, भजन-कीर्तन, प्रसाद वितरण, स्वच्छता कार्यक्रम चलाए जाएं। 22 जनवरी को सभी प्रमुख मंदिरों, गुरुद्वारों में प्रसाद वितरण किया जाए। जन सहभागिता से गरीबों तक प्रसाद वितरण की व्यवस्था की जाए। प्रसाद के रूप में उत्तराखण्ड के मिलेट्स को अधिक से अधिक शामिल किये जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि 22 जनवरी को सभी घरों में दीपोत्सव मनाने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाए। भगवान सूर्य उत्तरायण में प्रवेश कर रहे हैं, इस शुभ अवसर पर अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है। पूरे प्रदेश में इस अवसर को दीपावली के उत्सव की भांति मनाया जायेगा।

मुख्यमंत्री ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिये कि 14 से 22 जनवरी तक जनपदों में विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन किये जाएं। प्रमुख घाटों पर आरती, राम भजन, कलश यात्रा, वॉल पेंटिंग, कार्यालयों में लाइटिंग और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन कार्यक्रमों में नवाचार हो। सबसे अच्छा कार्यक्रम करने वाले जनपद को सम्मानित भी किया जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा सभी विभाग भी अपने स्तर से इस उपलक्ष्य में कार्यक्रम करें। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि 22 जनवरी को राज्य में ड्राई डे घोषित किया जाए। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि वृद्धाश्रमों, नारी निकेतन, कुष्ठाश्रम, अनाथालयों, अस्पतालों में भी सांस्कृतिक उत्सव के तहत कार्यक्रम आयोजित किये जाएं।

इस अवसर पर सभी जिलाधिकारियों ने 14 से 22 जनवरी तक सांस्कृतिक उत्सव में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। रघुनाथ मंदिर, देवप्रयाग में राम भजन के साथ भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। पिथौरागढ़ में रामेश्वर एवं पंचेश्वर मंदिर में भव्य आयोजन किये जायेंगे। चम्पावत छतार स्थित राम मंदिर एवं शारदा घाट में भी कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। बागेश्वर में उत्तरायणी कौथिक में राम मंदिर थीम पर आधारित झांकिया निकाली जायेंगी। अल्मोड़ा में कटारमल में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। चमोली में प्रयागों और पंचबद्री में कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। नैनीताल में कैंची धाम और नेना देवी मंदिर में भी भव्य कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव राधा रतूड़ी, सचिव एवं कमिश्नर गढ़वाल विनय शंकर पाण्डेय, सचिव संस्कृति एच.सी सेमवाल, निदेशक संस्कृति बीना भट्ट और वर्चुअल माध्यम सभी जिलाधिकारी उपस्थित थे।

बेटियों को सीएम धामी देंगे बड़ी सौगात! ये है प्लान

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 13 जनवरी , उत्तराखंड राज्य के युवाओं ने बीते कुछ वक्त में अपनी खेल प्रतिभाओं का शानदार प्रदर्शन कर राज्य को गौरवान्वित महसूस करवाया है। राज्य की इन्हीं खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने और युवाओं की प्रतिभा निखारने हेतु मुख्यमंत्री धामी द्वारा पूर्व में लोहाघाट में बालिका स्पोर्ट्स कॉलेज की घोषणा की गई थी। उत्तराखंड के चंपावत जिले के लोहाघाट में बनने जा रहे राज्य के पहले बालिका स्पोर्ट्स कॉलेज के लिए अब भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है।

मुख्यमंत्री जल्द ही इस कॉलेज की आधारशिला रखेंगे

खेल मंत्री रेखा आर्य ने बताया कि देहरादून स्थित महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज की तरह ही इस बालिका स्पोर्ट्स कॉलेज का भी निर्माण किया जाएगा। यह स्पोर्ट्स कॉलेज आवासीय होगा, जहां बालिकाओं को पढ़ने, खेलने के साथ ही आवास की सुविधा भी प्राप्त करवाई जाएगी। इस कॉलेज में उच्च स्तर की सुविधाएं विकसित की जाएगी ताकि बालिकाओं को अपने खेल कौशल को निखारने में पूर्ण मदद मिल सके। बताते चलें कि पिछले कुछ वक्त से राज्य सरकार खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है।

लोहाघाट में बनेगा उत्तराखंड का पहला बालिका स्पोर्ट्स कॉलेज

जिस तरह आज राज्य की बालिकाएं अपने खेल से राज्य व देश का नाम रोशन कर रही है, ऐसे में यह कॉलेज उनके लिए एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। कॉलेज में छात्राओं को संतुलित भोजन, आवास, खेल किट, कॉलेज यूनिफॉर्म, पाठ्य पुस्तक एवं लेखन सामग्री, पुस्तकालय तथा चिकित्सा सुविधा निशुल्क प्राप्त करवाई जाएगी। इसके साथ ही इस कॉलेज में सभी प्रकार के खेल, शिक्षा और उच्च कोटि की सुविधा भी छात्राओं को मिलेगी। उन्होंने कहा कि बालिका स्पोर्ट्स कॉलेज के निर्माण के बाद इसे जल्द ही प्रदेश की बालिकाओं को समर्पित कर दिया जाएगा।

क्या आप धीरे-धीरे बूढ़ा होना चाहते हैं ? पढ़िए रोचक खोज

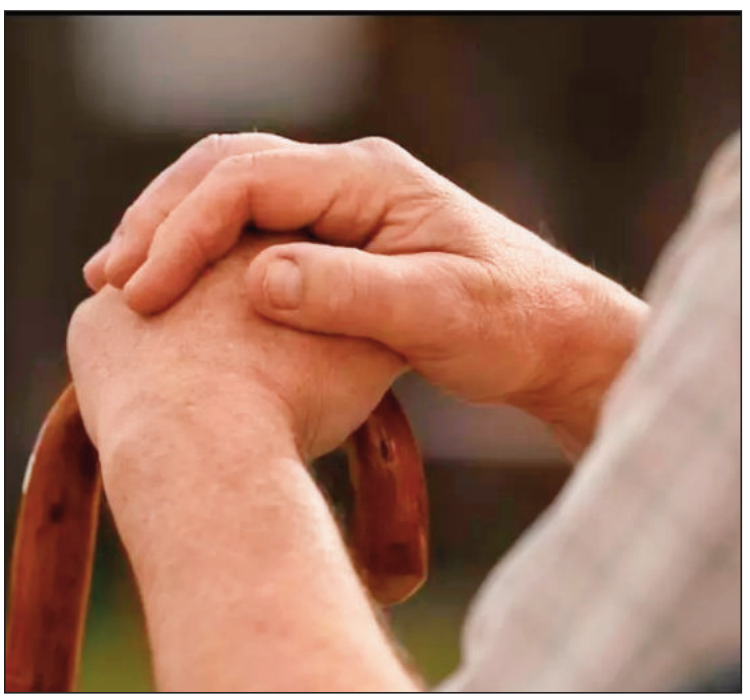

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , बढ़ती उम्र को कम करने के लिए लोग कौन-कौन से उपाय नहीं करते। कोई जिम जाकर कसरत करता है, तो कोई प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लेता है। लोग प्लास्टिक सर्जरी से लेकर पौष्टिक चीजों के सेवन तक का तरीका आजमाते हैं। बढ़ती उम्र को हर कोई रोकना चाहता है, लेकिन यह एक ऐसा सत्य है, जिसका सभी को एक न एक दिन सामना करना ही पड़ेगा। लेकिन, वैज्ञानिकों ने एक ऐसा तरीका खोजा है, जिससे बढ़ती उम्र को धीमा किया जा सकता है। इससे किसी भी व्यक्ति की जैविक आयु 2.5 साल कम हो सकती है। शोधकर्ताओं के अनुसार, हरे-भरे स्थान शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा देते हैं, सामाजिक संपर्क बढ़ाते हैं और यहां तक कि अपराध की घटनाओं को भी कम करते हैं।

साइंस जर्नल में बताया गया उपाय

साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट जर्नल में प्रकाशित निष्कर्षों से पता चलता है है कि हरे भरे स्थानों के पास रहने से व्यक्ति संभावित रूप से लगभग 2.5 वर्ष तक जैविक रूप से युवा दिखाई दे सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह प्रभाव शारीरिक और भावनात्मक दोनों तनावों को कम करने के परिणामस्वरूप होता है। वैज्ञानिकों ने लगभग 8,000 अमेरिकियों के डेटा की जांच की। उन्होंने पाया कि अधिक पार्कों, बगीचों, पेड़ों और अन्य हरियाली के बीच रहने वाले व्यक्तियों में लंबे टेलोमेर होते हैं। टेलोमेर एक व्यक्ति के 46 गुणसूत्रों के सिरों पर स्थित दोहराव वाले डीएनए अनुक्रम होते हैं। टेलोमेरेस कोशिका विभाजन के दौरान डीएनए को क्षति से बचाते हैं लेकिन प्रत्येक प्रक्रिया के साथ छोटे हो जाते हैं। इसलिए, उनकी लंबाई जैविक उम्र के अनुरूप हो सकती है।

हरियाली के और क्या-क्या फायदे

शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया कि हरियाली के लाभ शारीरिक और मनोवैज्ञानिक तनाव को कम करने से उत्पन्न होते हैं। पेड़ गर्म मौसम के दौरान छाया प्रदान करते हैं, वायु प्रदूषण को कम करते हैं और शोर को कम करते हैं। इससे भी अधिक, हरे-भरे स्थान शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा देते हैं, सामाजिक संपर्क बढ़ाते हैं और अपराध दर कम करते हैं। गौरतलब है कि अध्ययन में पाया गया कि टेलोमेर पर हरित स्थान का सकारात्मक प्रभाव नस्ल, आर्थिक स्थिति, धूम्रपान की आदतों और शराब की खपत के स्तर से प्रभावित होता है। उच्च वायु प्रदूषण स्तर वाले क्षेत्रों में इसका लाभ कम होता है।

तलाक़ से पहले करें ये बातें, बच जायेगा रिश्ता

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , कई बार कपल्स के बीच का मनमुटाव डिवॉर्स तक पहुंच जाता है. तब तक ऐसा लगने लगता है कि एक ही छत के नीचे दोनों का एक साथ रहना नहीं हो पा रहा है. ऐसे में तलाक लेने पर चर्चा होने लगती है. अगर इस तरह के मुश्किल दौर से किसी का रिश्ता गुजर रहा है तो अपने पार्टनर से कुछ सवाल करना चाहिए. कुछ बातों पर डिस्कशन कर रिश्ते में फिर से मजबूती ला सकते हैं. ये सब्जेक्ट रिश्ते और भविष्य से जुड़े होते हैं. एक बात और कि जब इन बातों को करें तो खुद की गलतियां स्वीकार करने से पीछने न हटे और पार्टनर की बात को पूरी तरह शांत होकर

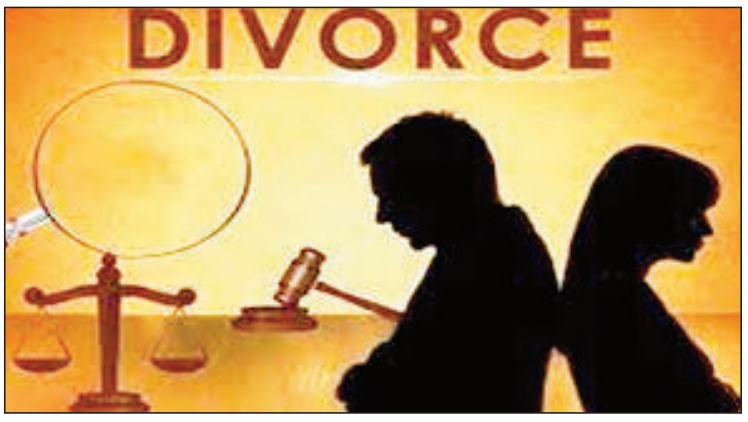

सुनें. इससे फैसला लेने में मदद तो होगी ही, टूटते रिश्ते बचाने में भी मदद मिल सकती है. आइए जानते हैं किन बातों पर डिस्कशन करना चाहिए...

तलाक लेने से पहले इन बातों पर करें डिस्कशन

क्या एक-दूसरे पर भरोसा है

ज्यादातर तलाक की सबसे बड़ी वजह शादी के बाहर के एक्स्ट्रा-मैरिटल रिलेशनशिप होते हैं. जब पति या पत्नी में किसी एक का एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर चलता है तो उसके पार्टनर का उस पर से विश्वास टूट जाता है और दोबारा से भरोसा कर पाना काफी मुश्किल होता है. ऐसे में तलाक होने की आशंका बढ़ जाती है. अगर आपने अपनी गलती मान ली है और अपनी शादी को टूटने से बचाना चाहते हैं तो अपने साथी से जरूर पूछें कि क्या क्या आप दोनों के लिए एक-दूसरे पर भरोसा कर पाना संभव है, क्या आफ दोबारा से विश्वास नहीं तोड़ेंगे. इन सवालों से कई जवाब खुद मिल जाएंगे और हो सकता है आपका रिश्ता भी बच जाए.

बच्चों का ख्याल कौन रखेगा

तलाक का एक दूसरा कारण पैसा भी होता है. तलाक के बाद पैसों की कमी से कई परेशानियां भी आती हैं. इसलिए जब आप दोनों ने अलग होने का फैसला ले ही लिया है तो बैठकर शांति से बच्चों की पढ़ाई, उनका ख्याल, होम लोन और बच्चों के भविष्य के लिए सेविंग्स पर खुलकर चर्चा करें. पैसों के लिए छोटी-छोटी बातों पर बाद में लड़ने से अच्छा है कि तलाक से पहले इन सभी पर बात करें लें. इससे रिश्तों में कड़वाहट भरने से बच सकता है.

खूबसूरत विधवा से शादी करने वाले अंग्रेज की कहानी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क
ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी

जानिए कैसे बना देश का पहला महानगर कोलकाता

भारत का पहला महानगर माना जाता है कलकत्ता, जिसे नया नाम मिल चुका है कोलकाता. यही कलकत्ता ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में अंग्रेजों की राजधानी था. लंबे समय तक उन्होंने कलकत्ता से पूरे देश पर राज किया, पर बंगाल विभाजन से उपजे विरोध और पूरे देश पर नजर रखने के लिए केंद्र में राजधानी बनाने की योजना बनी तब इसे दिल्ली शिफ्ट किया गया. कहा जाता है कि जॉब कारनॉक ने कलकत्ता की स्थापना की थी, जिनका 10 जनवरी 1692 को निधन हुआ था.आज उनकी पुण्यतिथि है तो चलिए जानते है क्या है इतिहास ---

1630 ईस्वी में लंदन में हुआ था जन्म

कारनॉक का जन्म सन-1630 में लंदन में हुआ था. वह अपने पिता रिचर्ड कारनॉक की दूसरी संतान थे. कारनॉक 1650 से 1653 तक मौरिस थॉमसन नाम की कंपनी में काम करते रहे पर बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी ज्वाइन कर ली और सन-1658 में बंगाल चले आए. हुगली में उनका अड्डा बना. हालांकि, हुगली में व्यापार करना या फैक्ट्री लगाना आसान नहीं था, क्योंकि वहां हमेशा फ्रांसीसी, पुर्तगालियों और डचों के

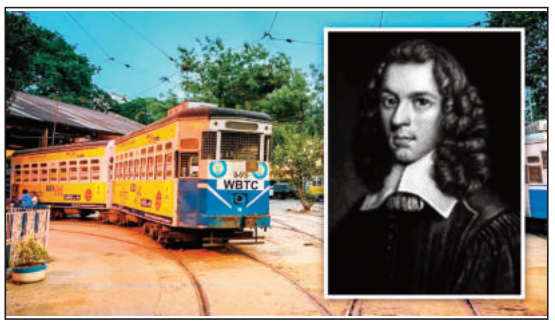

हमले का खतरा बना रहता था. इसलिए कारनॉक ने एक ऐसी जगह की तलाश की, जहां से आराम से व्यापार चले और फैक्ट्री की भी स्थापना की जा सके.

फैक्ट्री लगाने के लिए पहुंचे सुतानुती गांव

जॉब कारनॉक बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी के चीफ एजेंट थे और मुगल शासक औरंगजेब की अनुमति से बंगाल में फैक्टरी लगाने के लिए 24 अगस्त को सुतानुती गांव पहुंचे. यह स्थान आज भी नॉर्थ कोलकाता में है. फैक्ट्री लगाने के लिए जॉब कारनॉक ने सुतानुती के साथ ही दो और गांव चुने कालीकट और गोविंदपुर. तब मुगल सूबेदार आमिज उस्मान ने इन तीनों गांवों की जागीरदारी ईस्ट इंडिया कंपनी को ट्रांसफर की थी.वैसे तो अंग्रेजों के आने से पहले ही इन तीनों गांवों में लोग रहने लगे थे. कालीकट या कालीकोटा मछुआरों के गांव के रूप में जाना जाता था और सुतानुती बुनकरों के लिए प्रसिद्ध था. कारनॉक के आने बाद इन्हीं गांवों के आस-पास अफसरों-कर्मचारियों के लिए रहने-खाने की व्यवस्था की गई और देखते-देखते पूरा शहर बस गया. समय के साथ इसका विस्तार होता चला गया.

24 अगस्त को कलकत्ता का स्थापना दिवस

कहा जाता है कि कालीकट को कालीकोटा के रूप में भी जाना जाता है, जिसके नाम पर ही कोलकाता शहर का नाम है. कालीकोटा यानी मां काली का मंदिर या घर. चूंकि कारनॉक पहली बार 24 अगस्त को यहां आया था, इसीलिए इसी तारीख को कलकत्ता की स्थापना की तारीख मान ली गई. बाद में 24 अगस्त को ही कलकत्ता का स्थापना दिवस मनाया जाने लगा.

सती होने जा रही महिला को बचाकर की शादी

बताया जाता है कि जॉब कारनॉक ने पति की चिता पर सती होने जा रही एक लड़की को बचाया था. उसकी खूबसूरती से इतना मोहित हुआ कि उससे शादी भी कर ली और नया नाम दिया मारिया. जॉब कारनॉक और मारिया की तीन बेटियां और एक बेटा हुआ. 10 जनवरी 1692 ईस्वी को उनकी मौत हो गई. जिस स्थान पर उनको दफनाया गया था, वहीं 1787 ईस्वी में सेंट जॉन चर्च की स्थापना की गई.

ऐसे बना ब्रिटिश राज की राजधानी

मुगलों के शासन काल में बंगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद थी. भारत में ब्रिटिश राज के पहले गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के आदेश पर 1772 ईस्वी में सभी महत्वपूर्ण दफ्तर मुर्शिदाबाद से कलकत्ता ट्रांसफर कर दिए गए. वहीं से वह पूरे भारत पर शासन करने लगा और कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बन गया. 1774 में यहीं सुप्रीम कोर्ट की भी स्थापना की गई. कोलकाता पोर्ट, जिसे अब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट के नाम से जाना जाता है, के विकास में भी जॉब की भूमिका मिलती है.

कोर्ट ने खारिज कर दिया ओहदा

लंबे समय तक जॉब कारनॉक को कलकत्ता का संस्थापक माना जाता रहा. फिर करीब 20 साल पहले गोराचंद रॉय चौधरी कलकत्ता हाईकोर्ट पहुंच गए और इस तथ्य को चुनौती दी कि जॉब कारनॉक ने कलकत्ता की स्थापना की थी. उन्होंने कहा कि उनके पूर्वजों को अकबर के सेनापति मानसिंह ने यहां की जमीनें दी थीं और जॉब कारनॉक ने इसे 99 साल की लीज पर लिया था. इससे जुड़े कागजात भी कोर्ट में पेश किए गए. इनके आधार पर 16 मई 2003 को यह फैसला सुनाया कि जॉब कारनॉक कलकत्ता के संस्थापक नहीं थे. साथ ही यह भी 24 अगस्त कलकत्ता का स्थापना दिवस नहीं है.

जॉब कारनॉक के आगमन से पहले भी इसका अस्तित्व था. इस तरह कोर्ट के आदेश के बाद हर उस जगह से इस अंग्रेज अफसर का नाम हटाया गया, जहां उसे कोलकाता के संस्थापक के रूप में दर्ज किया गया था.।

अक्षत वितरण टोली ने निमंत्रण पत्रक मुख्यमंत्री धामी को भेंट किये

देहरादून , 13 जनवरी ,अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पूर्व मुख्यमंत्री आवास में अक्षत वितरण टोली के सदस्यों द्वारा श्री राम मंदिर, अयोध्या से लाए गए पूजित अक्षत, श्री राम मंदिर का चित्र एवं निमंत्रण पत्रक मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को भेंट किये गये। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान श्री राम आगामी 22 जनवरी को श्री अयोध्या धाम में नव्य-दिव्य मंदिर में विराजमान होंगे, जिसके अंतर्गत पूरे देश में धूमधाम से "अक्षत कलश यात्रा" संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को हम सब प्रभु श्री रामलला को भव्य मंदिर में विराजमान होते हुए देखेंगे। मुख्यमंत्री को पूजा-अर्चना के साथ टोली के सदस्यों चन्द्रगुप्त विक्रम, ज्ञानेश गोविन्द, सतीश, नीरज गौड़ एवं अन्य लोगो ने पूजित अक्षत, श्री राम मंदिर का चित्र एवं निमंत्रण पत्रक भेंट किये।

देहरादून में बढ़ रहे स्वाइन फ्लू के मरीज, एक की मौत

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून 13 जनवरी : सर्दी के मौसम में इन्फ्लूएंजा के साथ ही स्वाइन फ्लू के मरीज लगातार पॉजिटिव आ रहे हैं। दून अस्पताल समेत निजी अस्पतालों में स्वाइन फ्लू के मरीजों की पुष्टि हो रही है। स्वाइन फ्लू के एक मरीज की मौत भी हो चुकी है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से अब इन्फ्लुएंजा-ए के पॉजिटिव मरीजों की रिपोर्ट जारी नहीं की जा रही है।निजी अस्पताल श्री महंत इंदिरेश अस्पताल में 17 दिसंबर से नौ जनवरी तक स्वाइन फ्लू के पांच मरीज मिल चुके हैं। इसमें एक मरीज की मौत भी हो चुकी है। वहीं, कैलाश अस्पताल की रिपोर्ट के मुताबिक अस्पताल में स्वाइन फ्लू के तीन मरीज भर्ती हैं।एक जनवरी से अब तक कुल 11 मरीज मिले हैं। इसमें स्वाइन फ्लू के साथ ही इन्फ्लुएंजा-ए मरीज भी पॉजिटिव आए हैं। वहीं, मैक्स अस्पताल में इस समय एक स्वाइन फ्लू का मरीज भर्ती है। इन निजी अस्पताल प्रशासन का

कहना है कि स्वाइन फ्लू के मरीजों की रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग को भेजी जा रही है।इसका संक्रमण एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलता है। यह संपर्क कई तरीकों से हो सकता है जैसे, संक्रमित व्यक्ति की छींक के समय निकली संक्रमित द्रव की बूंदों के संपर्क में आने से, संक्रमित व्यक्ति के खांसने से निकली हवा के संपर्क में आने से और यदि संक्रमित व्यक्ति छींकने या खांसने के समय अपने हाथ को लगाता है और फिर इसी हाथ से किसी अन्य व्यक्ति से हाथ मिलाता है।

हरिद्वार : पिटबुल नस्ल के कुत्ते के हमले में महिला की मौत

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

हरिद्वार 13 जनवरी ; हरिद्वार के रुड़की में पिटबुल नस्ल के कुत्ते के हमले में महिला की मौत के मामले में पुलिस ने कुत्ते के मालिक पर गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज कर लिया है। साथ ही कुत्ते के मालिक को मामले में नोटिस भी भेजा है। पुलिस मामले में कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल करने की तैयारी कर रही है।सिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र स्थित ढंढेरा निवासी बुजुर्ग महिला कैला देवी निवासी दोपहर पोस्ट ऑफिस वाली गली में जा रही थीं। इस दौरान पिटबुल नस्ल के कुत्ते ने उन पर जानलेवा हमला कर दिया था। शोर मचाने पर आसपास के लोगों ने किसी तरह महिला को कुत्ते से छुड़ाया था। हमले में महिला गंभीर रूप से घायल हो गई । गंभीर हालत में उन्हें रुड़की सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वहां डॉक्टरों ने उनकी गंभीर हालत देखते हुए ऋषिकेश एम्स रेफर कर दिया।महिला के बेटे संजय की तहरीर पर पुलिस

ने कुत्ते के मालिक पर केस दर्ज कर लिया। इसके बाद महिला के पुलिस ने बयान दर्ज किए । महिला ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया था। इस मामले में पुलिस ने गैर इरादतन हत्या की धारा तरमीम करने के लिए विधिक राय मांगी थी। कोतवाली प्रभारी आरके सकलानी ने बताया कि विधिक राय के बाद मामला गैर इरादतन हत्या में तरमीम कर लिया गया है। इस मामले में कुत्ते के मालिक को भी नोटिस देकर इसकी जानकारी दी गई है। उन्होंने बताया कि मामले में कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल करने की भी तैयारी की जा रही है।

गिरेगी बर्फ पड़ेगी ठंड घने कोहरे में उत्तराखंड

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 13 जनवरी , मौसम के बदलते पैटर्न से इस साल विंटर बारिश न होने की वजह से बर्फबारी नहीं हुई है। बीते दो दिनों से विंड चिल इफेक्ट के सक्रिय होने से ठिठुरन बढ़ गई है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले कुछ दिनों तक भी बारिश-बर्फबारी के आसार नहीं है। ऐसे में पहाड़ों में पाला तो मैदानी इलाकों में घना कोहरा छाने से प्रदेश भर में लोगों को ठंड सताएगी।

मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि उत्तर पश्चिमी हवाओं के चलने से विंड चिल इफेक्ट सक्रिय हुआ है। यही वजह है कि पहाड़ से लेकर मैदान तक बिना बारिश-बर्फबारी के ठिठुरन बढ़ गई है। विंड चिल इफेक्ट की वजह से तेजी से तापमान गिरता है। ऐसे में जब व्यक्ति ठंड में बाहर खड़ा होता है तो उसके

शरीर से गर्मी खत्म होने लगती है।मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक बिक्रम सिंह ने बताया, विंड चिल इफेक्ट का सीधा असर तापमान पर पड़ता है। शीतलहर चलने से बारिश-बर्फबारी जैसी ठंड महसूस होती है। बारिश-बर्फबारी की बात करें तो अगले छह दिन तक बारिश होने की कोई संभावना नहीं है। बारिश होने के बाद ही ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी होने की संभावना है।

छाया रहेगा घना कोहरा

प्रदेश के मैदानी इलाकों में आज भी घना कोहरा छाया रहेगा। मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से देहरादून समेत ऊधमसिंह नगर, पौड़ी, हरिद्वार और नैनीताल जिले में घना कोहरा छाने का येलो अलर्ट जारी किया गया है। उधर पहाड़ी इलाकों में पाला पड़ने से शीत दिवस की स्थिति रहने की संभावना है।मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि बर्फबारी होने के लिए बारिश का होना जरूरी है। बारिश से तापमान में कमी आती है और तापमान शून्य होने के बाद ही बर्फबारी होती है। लेकिन इस साल विंटर बारिश नहीं होने की वजह से बर्फबारी नहीं हो रही है।

काठगोदाम से देहरादून के बीच चल सकती है वंदे भारत ट्रेन

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून 13 जनवरी : काठगोदाम से देहरादून के लिए वंदे भारत ट्रेन चल सकती है। रेल सूत्रों के अनुसार इस ट्रेन के संचालन की अधिक संभावना है। इसके संचालन से कुमाऊं से देहरादून के लिए तीसरी ट्रेन का विकल्प मिल जाएगा।

देहरादून से दिल्ली के लिए वंदे भारत ट्रेन का संचालन शुरू हो गया था । पर अभी तक कुमाऊं से कोई भी वंदे भारत ट्रेन शुरू नहीं हो सकी है। रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री वंदे भारत ट्रेन के संचालन को लेकर रेलवे को पत्र भी लिख चुके हैं। पहले माना जा रहा था कि यह ट्रेन दिल्ली के लिए शुरू हो सकती है। पर रेलवे सूत्रों के अनुसार, इस ट्रेन की सबसे अधिक संभावना काठगोदाम से देहरादून के लिए संचालित होने को लेकर है

इसके चलने से यात्रियों और सैलानियों दोनों के पास कुमाऊं और गढ़वाल दोनों जगहों को जाने के लिए एक और ट्रेन का विकल्प मिल सकेगा। अभी काठगोदाम से देहरादून के लिए सुबह जनशताब्दी और रात को काठगोदाम-देहरादून एक्सप्रेस का ही विकल्प है। दिन के समय कोई भी ट्रेन नहीं है। इसे देखते हुए काठगोदाम से देहरादून के बीच जल्द वंदे भारत ट्रेन शुरू हो सकती है।

सोशल मीडिया रील्स, पोस्ट के शौक़ीन पुलिसकर्मी पढ़ लें ये नियम

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 13 जनवरी , उत्तराखंड के कार्यवाहक डीजीपी अभिनव कुमार और उत्तराखंड सरकार का स्पष्ट उद्देश्य है कि जनता की सुरक्षा और प्रदेश में आंतरिक शांति और सुरक्षा कायम रहे इसके लिए बहुत ज़रुरी है कि पुलिस का फोकस साफ़ और सटीक हो लिहाज़ा अब पुलिस महकमे से एक आदेश प्रदेशभर के उन पुलिसकर्मियों के लिए वार्निंग और एडवाइस के रूप में बनायीं गयी है जो सोशल मीडिया में आये दिन अपनी रील्स , पोस्ट और एक्टिविटीज शेयर करते हैं।

पीएचक्यू प्रवक्ता और वरिष्ठ आईपीएस नीलेश आनंद भरणे ने बताया कि कुछ समय से ऐसे केस सामने आ रहे हैं, जहां पर पुलिस कार्मिकों द्वारा सोशल मीडिया पॉलिसी एवं उत्तराखंड सरकारी कर्मचारी आचरण नियमावली 2002 का उल्लंघन करते हुये सरकारी कार्य के दौरान सोशल मीडिया के प्रयोग एवं वावर्दी अशोभनीय रूप से वीडियो बनाकर उनको सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर अपलोड किया गया है। भविष्य में इस प्रकार के कृत्यों की पुनरावृत्ति रोकने के लिए गृह मंत्रालय, भारत सरकार, BPR&D एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MieitY) की गाइडलाइन, उत्तराखण्ड सरकारी सेवक आचरण नियमावली, पुलिस वर्दी विनियम, ऑफिसियल सीक्रेट एक्ट तथा अन्य सुसंगत नियमों के अन्तर्गत पुलिस महानिदेशक के अनुमोदन के बाद विस्तृत सोशल मीडिया पॉलिसी जारी की गयी है।

सोशल मीडिया पर सक्रिय पुलिसकर्मी पढ़ लें ये एडवाइज़री

कार्य सरकार के दौरान प्रत्येक पुलिस कार्मिक का यह कर्तव्य है कि वह प्रदत्त कार्यों को पूर्ण लगन एवं मनोयोग से निष्पादित करें। सरकारी कार्य के दौरान सोशल मीडिया का व्यक्तिगत प्रयोग निश्चित रूप से पुलिसकर्मी के बहुमूल्य समय को नष्ट करता है। अतः राजकीय एवं विभागीय हित में इसे प्रतिबंधित किया जाता है।कार्य सरकार के दौरान अपने कार्यालय एवं कार्यस्थल पर वर्दी में वीडियो/रील्स इत्यादि बनाने अथवा किसी भी कार्मिक द्वारा अपने व्यक्तिगत सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर लाइव टेलीकास्ट को प्रतिबन्धित किया जाता है। ड्यूटी के उपरान्त भी बावर्दी किसी भी प्रकार की ऐसी वीडियो अथवा रील्स इत्यादि, जिससे पुलिस की छवि धूमिल होती हो, सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अपलोड किये जाने को प्रतिबन्धित किया जाता है।थाना/पुलिस लाईन/कार्यालय इत्यादि के निरीक्षण एवं पुलिस ड्रिल/फायरिंग में भाग लेने का लाइव टेलीकास्ट एवं कार्यवाही से सम्बन्धित वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड करना गोपनीयता का उल्लंघन है। कार्य सरकार की गोपनीयता बनाए रखने के दृष्टिगत सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर इसे प्रतिबन्धित किया जाता है।

अपने कार्यस्थल से सम्बन्धित किसी वीडियो/रील्स इत्यादि के जरिये शिकायतकर्ता के संवाद का लाईव टेलीकास्ट/वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अपलोड करना उसकी निजता का उल्लंघन हो सकता है। अतः सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर इसे प्रतिबन्धित किया जाता है। पुलिस कार्मिक द्वारा कार्य सरकार के दौरान सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर किसी प्रकार की कोचिंग, लेक्चर, लाइव प्रसारण, चैट, वेबिनार इत्यादि में आमंत्रित किये जाने पर उसमें भाग लेने से पूर्व अपने वरिष्ठ अधिकारी को सूचित कर अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य होगा। सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म से पुलिस कार्मिक किसी भी प्रकार का धनार्जन/आय प्राप्त नहीं करेंगे, जब तक कि इस सम्बन्ध में उनके द्वारा सरकार की पूर्व स्वीकृति प्राप्त न कर ली जाये। (उत्तराखण्ड सरकारी सेवक आचरण नियमावली 2002 में उल्लिखित है कि कोई सरकारी कर्मचारी, सिवाय उस दशा में, जबकि उसने सरकार की पूर्व स्वीकृति प्राप्त कर ली हो, प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः किसी व्यापार या कारोबार में नहीं लगेगा और न ही कोई नौकरी करेगा।) सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म से किसी भी व्यक्तिगत, व्यावसायिक कम्पनी अथवा उत्पाद/सेवा का प्रचार-प्रसार किया जाना प्रतिबंधित किया जाता है।

सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पुलिस कार्मिकों द्वारा ऐसी कोई जानकारी साझा नहीं की जाएगी, जो उन्हें अपनी विभागीय नियुक्ति के कारण प्राप्त हुई हो। ऐसी कोई जानकारी तभी साझा की जा सकेगी, जब वह कार्मिक इस कार्य के लिये अधिकृत हो। निजता एवं सुरक्षा के कारणों से सरकारी एवं व्यक्तिगत, सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पुलिस कार्मिकों द्वारा अपनी अथवा किसी अन्य पुलिस कार्मिक की विशेष नियुक्ति या व्यक्तिगत विवरण का उल्लेख नहीं किया जायेगा। अभिसूचना संकलन या किसी गुप्त ऑपरेशन (Under cover operation) में संलग्न पुलिस कार्मिकों द्वारा इस प्राविधान का सख्ती से अनुपालन किया जायेगा। अपराध के अन्वेषण, विवेचनाधीन या न्यायालय में लंबित प्रकरणों से सम्बंधित कोई गोपनीय जानकारी सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर साझा नहीं की जाएगी एवं उन पर कोई टिप्पणी नहीं की जाएगी। उपरोक्त विषय वस्तु पर सक्षम अधिकारी द्वारा अधिकृत या सक्षम अधिकारी द्वारा ही आवश्यक

जानकारी सार्वजनिक प्रेस नोट द्वारा साझा की जायेगी। किसी भी गोपनीय सरकारी दस्तावेज, हस्ताक्षरित रिपोर्ट अथवा पीड़ित के प्रार्थना-पत्र को सरकारी या व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर नहीं डाला जायेगा।

किसी भी यौन शोषित पीड़िता या किशोर/किशोरी तथा किशोर आरोपित दोषी (जुवेनाइल ऑफेन्डर्स) की पहचान अथवा नाम व अन्य सम्बन्धित विवरण सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर उजागर नहीं किया जाएगा। जिन आरोपियों की शिनाख्त परेड बाकी हो, उनका चेहरा सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सार्वजनिक नहीं किया जाएगा। सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर महिलाओं एवं अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति की गरिमा को प्रभावित करने वाले या उनकी गरिमा के विपरीत कोई भी टिप्पणी नहीं की जायेगी। सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पुलिस कार्मिकों द्वारा पुलिस विभाग, किसी वरिष्ठ अधिकारी या अपने सहकर्मी के विरुद्ध कोई आपत्तिजनक टिप्पणी नहीं की जायेगी, जिससे विभागीय गरिमा प्रभावित हो। पुलिसकर्मियों द्वारा विभाग में असंतोष की भावना फैलाने वाली पोस्ट अथवा सामग्री सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर साझा नहीं की जायेगी। पुलिस की टैक्टिस, फील्ड क्राफ्ट, विवेचना या अपराध के अन्वेषण में प्रयुक्त होने वाली तकनीक की जानकारी सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर साझा नहीं की जायेगी।

पुलिसकर्मियों द्वारा सरकार या उसकी नीतियों, कार्यक्रमों अथवा राजनीतिक दल, राजनीतिक व्यक्ति, राजनीतिक विचारधारा एवं राजनेता के संबंध में सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर कोई टिप्पणी नहीं की जायेगी। पुलिसकर्मियों द्वारा अश्लील/हिंसात्मक भाषा का प्रयोग एवं अश्लील फोटो/वीडियो, सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पोस्ट अथवा साझा नहीं किया जायेगा। पुलिसकर्मियों द्वारा सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट से की जाने वाली पोस्ट में किसी जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय, व्यवसाय, सेवाएं, संवर्ग, लिंग, क्षेत्र, राज्य इत्यादि के संबंध में भेदभाव पूर्ण, पूर्वाग्रह या दुराग्रह से ग्रसित कोई टिप्पणी नहीं की जाएगी। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील प्रकरणों में सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर कोई टिप्पणी नहीं की जाएगी।माननीय न्यायालयों द्वारा निर्गत दिशा-निर्देशों का उल्लंघन नहीं किया जाएगा। सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर ऐसी कोई पोस्ट नहीं की जायेगी और न ही ऐसी कोई विषयवस्तु साझा की जायेगी, जिससे मा० न्यायालयों की अवमानना की स्थिति उत्पन्न हो ।

पुलिसकर्मियों द्वारा सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट से ऐसे किसी व्यक्ति के साथ फोटो पोस्ट नहीं की जायेगी, जो आपराधिक/अवांछित/गैर सामाजिक गतिविधियों में लिप्त हो, या रहा हो, या जिसका इस प्रकार का आपराधिक इतिहास हो। सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पुलिस कार्मिकों द्वारा मित्रों का चयन करते समय सतर्कता बरतना अपेक्षित है। पुलिस कार्मिक ऐसे किसी व्यक्ति को मित्र न बनायें अथवा फॉलो न करें, जो असामाजिक/आपराधिक गतिविधियों में लिप्त हों। पुलिसकर्मियों द्वारा किसी भी प्रकार के मादक पदार्थों के प्रभाव में तथा मादक पदार्थों के साथ फोटो/वीडियो व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट से पोस्ट/साझा (Share) नहीं की जायेगी।

पुलिस के "सराहनीय कार्य" से सम्बन्धित पोस्ट में अभियुक्तों की फोटो/वीडियो सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर ब्लर करके ही पोस्ट/साझा की जायेगी।पुलिस कार्यवाही के दौरान बरामद माल एवं हथियार को बिना सील मोहर किये हुए फोटो/वीडियो सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर नहीं डाली जायेगी। पुलिसकर्मियों द्वारा गश्त/वाहन चैकिंग के दौरान मौके पर मोबाइल से फोटो/वीडियो लेते समय Geo Tagging के विकल्प को बंद रखा जायेगा। गश्त/पैट्रोलिंग या राजकीय कार्यों के निष्पादन के समय कार्यक्षेत्र मे मिलने वाले व्यक्तियों की फोटो/वीडियो आवश्यकता पड़ने पर ब्लर करके ही सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर डाली जायेगी। पुलिस की वर्दी, सरकारी अस्त्र-शस्त्र/वाहन इत्यादि का प्रयोग करते हुए पुलिस कार्मिक के परिजन/मित्रों इत्यादि द्वारा कोई वीडियो/फोटो अपने व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट से अपलोड नहीं किया जायेगा। पुलिसकर्मियों द्वारा व्यक्तिगत कार्यों/व्यक्तिगत आयोजनों से सम्बन्धित फोटो/वीडियो सरकारी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पोस्ट/साझा नहीं किया जायेगा। पुलिसकर्मियों द्वारा इंडियन कॉपीराईट एक्ट, 1957/द कॉपीराईट एक्ट, 1957 का उल्लंघन किये जाने वाली कोई भी पोस्ट, फोटो/वीडियो सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अपलोड/साझा नहीं की जायेगी। पुलिसकर्मियों द्वारा किसी भी प्रकार के सांकेतिक विरोध से सम्बन्धित प्रतीक को सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट के डीपी/प्रोफाइल पिक्चर आदि के रूप में नहीं लगाया जायेगा। पुलिस कार्मिक द्वारा सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट की डीपी/प्रोफाइल पिक्चर पर किसी भी संगठन या राजनीतिक दल आदि से सम्बन्धित प्रतीक नहीं लगाया जायेगा। पुलिस कार्मिक, सरकारी एवं व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट से ऐसे किसी भी व्हाट्सएप गुरप, पेज इत्यादि को ज्वाइन नहीं करेंगे, जो पुलिस विभाग या सरकार के विरोध में हो एवं जाति, साम्प्रायिक, क्षेत्रवाद आदि के नाम पर बनाया गया हो और न ही स्वयं ऐसा कोई ग्रुप बनायेंगे।पुलिस कार्मिक सरकारी सोशल मीडिया अकाउंट को अपने व्यक्तिगत मोबाइल पर लॉग-इन नहीं करेंगे। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर व्यक्तिगत अकाउंट बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि सरकारी मोबाइल नम्बर, इन्टरनेट, वाई-फाई, आई0पी0 एड्रैस, ई-मेल आईडी का प्रयोग नहीं किया जायेगा। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर प्राप्त होने वाली पोस्ट, फोटो/वीडियो को सत्यापन किये बिना अग्रसारित नहीं किया जायेगा । पुलिस कार्मिक द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से सेवा सम्बन्धी प्रकरणों का निराकरण करने हेतु वीडियो अथवा पोस्ट अपलोड/साक्षा नहीं किया जायेगा। कार्मिकों द्वारा अपने सेवा सम्बन्धी प्रकरणों के निस्तारण हेतु विभागीय प्रक्रिया का पालन किया जायेगा। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर प्रचलित ऑनलाइन पॉल/वोटिंग पर किसी भी सरकारी सोशल मीडिया अकाउंट से बिना अनुमति के प्रतिभाग नहीं किया जायेगा और नहीं उक्त सम्बन्ध में कोई टिप्पणी की जायेगी।पुलिस कार्मिकों द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर किसी भी व्यक्ति को ट्रोल अथवा बुली (Bullying) नहीं किया जायेगा।

IAS कोचिंग सेंटरों की लूट पर रोक लगाएगी सरकार

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण के दायरे में कुछ दिशा निर्देश तय किए हैं। जिसके बाद IAS कोचिंग सेंटरों की लूट पर रोक लगने वाली है। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के इस सपने की आड़ में 'लूट' का बाजार चल रहा है लेकिन अब सरकार रोक लगाने के लिए काम करने शुरू कर दिया है।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने आईएएस कोचिंग संस्थानों के भ्रामक विज्ञापनों के संबंध में मसौदा दिशानिर्देश जारी किए। सरकार की ओर से यह कदम हाल ही में देश के 31 कोचिंग संस्थानों को नोटिस भेजने के बाद उठाया गया है। सरकार ने जिन कोचिंग संस्थानों को नोटिस भेजा था, उनमें अनएकेडमी, बायजूस आईएएस, वाजीराव एंड रेड्डी के साथ-साथ डॉ. विकास कुमार दिव्यकीर्ति का 'दृष्टि आईएएस' भी शामिल है।

सीसीपीए दिशानिर्देशों के अनुसार, आईएएस कोचिंग सेंटर परीक्षा में सफलता दर के बारे में गलत दावे नहीं कर सकते। उनसे 100 प्रतिशत चयन जैसे दावों से बचने को कहा गया है। इतना ही नहीं, कोचिंग संस्थानों को अब अपने यहां से चुने गए छात्रों की संख्या को लेकर 'झूठे' दावे करने से भी बचना होगा। उनसे छात्रों (ग्राहकों) को गुमराह करने वाली किसी भी व्यावसायिक प्रथा से बचने के लिए कहा गया है।सीसीपीए ने अपने दिशानिर्देशों में आईएएस कोचिंग के लिए विज्ञापन जारी करने से पहले 'क्या किया जाना चाहिए' और 'क्या नहीं किया जाना चाहिए' की एक सूची भी जारी की है। अब से कोचिंग संस्थान यदि अपने यहां से चुने गए किसी छात्र को विज्ञापन में जगह देंगे। तो उन्हें अपना नाम, फोटो, अपनी रैंक, उसके द्वारा चुने गए कोर्स की जानकारी, कोर्स की अवधि बतानी होगी। यह भी बताया जाना चाहिए कि क्या उसने जो कोचिंग कोर्स लिया उसके लिए पैसे दिए या वह 'मुफ्त' कोर्स था।इतना ही नहीं, यदि कोचिंग संस्थान अपने विज्ञापन में 'डिस्क्लेमर' लगाते हैं तो उसका फ़ॉन्ट आकार और विज्ञापन में प्रयुक्त भाषा का फ़ॉन्ट आकार एक समान होना चाहिए। विज्ञापन में अस्वीकरण इस प्रकार रखा जाना चाहिए कि वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

उत्तरांचल पंजाबी महासभा ऋषिकेश के लोहड़ी महोत्सव में मची धूम

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ऋषिकेश 13 जनवरी , उत्तरांचल पंजाबी महासभा ऋषिकेश की ओर से लोहड़ी पर धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट और क्षेत्रीय विधायक व कैबिनेट मंत्री डॉ प्रेमचंद अग्रवाल ने लोहड़ी जलाकर एक दूसरे को बधाइयां दी। इस दौरान पंजाबी गायक जस्सा बिट्स, गायिका मोनिका और जूनियर हनी सिंह ने गीतों की शानदार प्रस्तुति दी।

कैबिनेट मंत्री डॉ प्रेमचंद अग्रवाल ने लोहड़ी जलाकर बधाइयां दी

बीती देर रात्रि नगर निगम परिसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने कहा कि लोहड़ी का त्योहार की एक अलग धूम ही होती है । इसे हर्षोल्लास का त्योहार कहा गया है। उन्होंने कहा कि सिख समाज के लिए लोहड़ी पर्व विशेष महत्व रखती है। लोहड़ी की संध्या को आग जलाकर सभी लोग उसके चारों ओर चक्कर काटते हुए नाचते गाते हैं इस दौरान अग्नि देव का आभार प्रकट करने के लिए आग में रेवड़ी, मूंगफली, खिल, मकई के दानों की आहुति दी जाती है। जिस घर में कोई भी शुभ कार्य होता है वहां लोहड़ी को और भी धूमधाम से मनाया जाता है। मंत्री डॉक्टर अग्रवाल ने कहा कि नई फसल के आगमन के उपलक्ष में मनाया जाने वाला यह लोहड़ी का पर्व भारत की उल्लास पूर्ण और रंग बिरंगी संस्कृति का परिचायक है। कहा कि नव ऊर्जा और नए संकल्प के साथ यह उत्सव हमारी परंपराओं एवं मान्यताओं को आत्मसात करने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हमें समाज में समरसता और सौहार्द कायम रखने के साथ ही प्रदेश की सुख समृद्धि में सहभागी बनने का संकल्प लेना होगा।

इस दौरान पंजाबी गीतों की प्रस्तुति दी गई। जिसमें दर्शकों को नाचने पर मजबूर किया। इस दौरान विधायक कैंट सविता कपूर, निवर्तमान मेयर अनिता ममगाई, पंजाबी महासभा के अध्यक्ष केके लाम्बा, महामंत्री प्रदीप कोहली, कार्यक्रम संयोजक प्रतीक कालिया, कमलकांत मलिक, प्रदेश उपाध्यक्ष पंजाबी महासभा सुभाष कोहली, भाजपा जिला अध्यक्ष रविंद्र राणा, योगेश पाहवा, नवल कपूर, सतीश सिंह, संदीप मल्होत्रा, शिवकुमार गौतम, विशाल कक्कड, महंत लोकेश दास, हरीश आनंद, राजीव कालड़ा, दीपक धमीजा, मदन मोहन नागपाल, जयंत शर्मा, अजय कालड़ा, चंद्रभूषण जैन, दीप शर्मा, सरदार गुरविंदर सिंह, आशु डंग, सुरेंद्र कक्कड़, प्रिंस मनचंदा, अविनाश भारद्वाज, रमेश अरोड़ा सहित सैकड़ो की संख्या में सिख समुदाय के लोग उपस्थित रहे।

दुनिया का इकलौता ज्वालामुखी, जिसके अंदर बड़े आराम से घूमते हैं लोग

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 13 जनवरी : जब ज्वालामुखी की बात आती है तो आपको फिल्मों में देखे गए वो दृश्य याद आ जाते होंगे जब हीरो-हीरोइन खौलते लावा से भागते हुए अपनी और दूसरों की जान बचाते हैं. ज्वालामुखी वाकई बेहद खतरनाक होते हैं और अगर किसी सक्रिय ज्वालामुखी में इंसान या कोई जीव गिर जाए, तो पलक झपकते ही वह राख बन जाएगा. पर सोचिए अगर इंसान आसानी से किसी ज्वालामुखी के अंदर घूमने जा सके तो? ऐसा वाकई हो सकता है. मेक्सिको में एक ज्वालामुखी है जिसके अंदर लोग घूमने जाते हैं. इसके अंदर जाने से इंसान की जान पर कोई खतरा नहीं होता। एम्यूजिंग प्लेनेट वेबसाइट की रिपोर्ट के अनुसार मेक्सिको के पुएब्ला शहर में ला लिब्रेटेड नाम का एक मोहल्ला है.

यहां Cuexcomate नाम का एक ज्वालामुखी है, जिसे सदियों तक लोग दुनिया का सबसे छोटा ज्वालामुखी माना करते थे. पर असल में ये एक ज्वालामुखी नहीं है. ये सिलिका और कैल्शियम कंपाउंड से बना एक पहाड़ नुमा स्ट्रक्चर है. लोगों का अंदाजा है कि साल 1064 में जब मेक्सिको का एक सक्रिय ज्वालामुखी फूटा होगा, तो उसके फटने से यहां पर ये पदार्थ बाहर निकले और मुहाने पर जम गए.वैज्ञानिकों का मानना है कि ये एक गीजर रहा होगा जिसे गर्म पानी का प्राकृतिक स्रोत माना जाता है. एक वेबसाइट के अनुसार आखिरी बार ये ज्वालामुखी 1600 के साल में फूटा होगा, तब से ये निष्क्रिय हो चुका है. अब ये ज्वालामुखी 43 फीट ऊंचा हो चुका है और 75 फीट फैला हुआ है. अंदर खोखला है तो उसमें 23 फीट का मुहाना है, जिसमें लोहे की सीढ़ियां लगी हुई है. यहां काफी टूरिस्ट आते हैं और अंदर से इसके देखने का आनंद लेते हैं.

1970 में इस ज्वालामुखी के बाहर एक बोर्ड लगाया गया था, जिसमें लिखी जानकारी 1585 के दौर की बताई जाती है. उसपर लिखा है कि अंदर बदबूदार पानी भरा हुआ है. उस दौर में लोग यहां इंसान की बलि चढ़ाया करते थे और जो लोग आत्महत्या कर देते थे, उनकी लाशों को यहां फेंक दिया जाता था. इस शहर में अब ये पॉपुलर टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन चुका है.

जिम कॉर्बेट फाल में साइकिलिंग कर सकेंगे सैलानी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , जिम कॉर्बेट हमेशा से ही सैलानियों की पसंदीदा जगह रही है। जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क प्रशासन सैलानियों को रिझाने के लिए हर मुमकिन कोशिश कर रहा है। जिससे ज्यादा से ज्यादा सैलानी कॉर्बेट नेशनल पार्क घूमने आ सके और प्रकृति का नजदीकी से दीदार कर सके। जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क से सटे रामनगर वन प्रभाग में अब सैलानी सबसे चर्चित कॉर्बेट फाल में साइकिलिंग कर सकेंगे। इसके लिए यहाँ साइकिल ट्रैक बनाया गया है।साइकिल ट्रैक के जरिये 2 किलोमीटर के ट्रैक में जंगल के नजारों, वन्यजीव और पक्षियों का नजदीक से दीदार भी कर सकेंगे। डीएफओ दिगंत नायक ने बताया कि अभी उच्चाधिकारियों को 10 साइकिल का प्रस्ताव भेजा गया है। इसका चार्ज भी निर्धारित किया गया है।

आपको बता दें कि, कॉर्बेट से सटे रामनगर वन प्रभाग के अंतर्गत आने वाले कालाढूंगी रेंज के नया गांव स्थित कॉर्बेट फाल में जंगल के अंदर पर्यटक दो किलोमीटर साइकिलिंग कर सकेंगे। इसके लिए

जंगल के अंदर ही साइकलिंग ट्रैक बनाया गया है। इससे सैलानी साइकिल पर सवार होकर जंगल और वन्यजीवों का नजदीकी से दीदार कर सकेंगे। सुरक्षा की दृष्टि से इस पूरे क्षेत्र को पूर्व में ही सोलर फेंसिंग से कवर्ड किया गया है।वन प्रभाग के अधिकारी बताते हैं कि साइकिलिंग ट्रैक बनाने के लिए तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। उच्चाधिकारियों को 10 साइकिल का प्रस्ताव भेजा गया है। साइकिल आते ही ट्रैक को शुरू कर दिया जाएगा। इसका शुल्क 50 रुपये निर्धारित किया गया है। 50 रुपये में 2 किलोमीटर ट्रैक में पर्यटक जंगल का लुत्फ उठा सकते है।

पवित्र काबा की चाबी के मालिक शायबा परिवार की कहानी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , सऊदी अरब के मक्का में स्थित काबा इस्लाम का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल है. यहां हर साल दुनियाभर से करोड़ों मुसलमान आते हैं, जिनके लिए वीजा से लेकर रहने तक का इंतजाम खासतौर पर सऊदी सरकार करती है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि पवित्र काबा की चाबी किसके पास रहती है? दरअसल, सऊदी के शाही परिवार या प्रशासन का इससे दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है. आज हम आपको बताएंगे कि पवित्र काबा की चाबी किसके पास है. बता दें कि काबा की चाबी 16वीं सदी से से शायबा परिवार के पास है. इतना ही नहीं, बगैर उनकी इजाजत के कोई भी काबा के अंदर दाखिल तक नहीं हो सकता है. काबा की देखरेख और गेट खोलना समेत हर काम की जिम्मेदारी शायबा परिवार के पास है.

शायबा परिवार के पास कैसे आई चाबी?

शायबा परिवार के पास काबा की चाबी आने की कहानी काफी पुरानी और दिलचस्प है. जानकारी के मुताबिक, पैगंबर इब्राहिम ने अपने बेटे पैगंबर इस्माइल को काबा की गार्जियनशिप सौंपी थी, जो उनके बेटों को ट्रांसफर हो गई. इसके बाद काबा का संरक्षण जुरहम जनजाति और फिर खुज़ा जनजाति के पास आया. इसके बाद पैगंबर के पूर्वज माने जाने वाले कुसै-बिन-किलाब ने गार्जियनशिप हासिल की. इस तरह एक हाथ से दूसरे हाथ होते हुए चाबी उस्मान बिन तल्हा तक पहुंची. बता दें कि उस्मान पहले मुसलमान नहीं थे. वर्ष 630 ईस्वी (8 हिजरी) में मक्का पर जीत हासिल करने के बाद पैगंबर मोहम्मद और शहाबा जब शहर में दाखिल हुए तो पाया कि काबा का दरवाजा बंद है और उस्मान बिन तल्हा ने चाबी छिपा दी है. पैगंबर ने अली को उस्मान से चाबी लेने के लिए भेजा. इस तरह चाबी पैगंबर के हाथ में आई और वह काबा का दरवाजा खोलकर अंदर गए और दो रकअत की नमाज अदा की.

फिर लौटा दी चाबी

पैगंबर मोहम्मद के चाचा अब्बास ने उनसे अनुरोध किया कि हमारा परिवार हज के लिए आने वाले तीर्थ यात्रियों की जिम्मेदारी उठाता है, इसलिये आप चाहें तो चाबी हमें सौंप सकते हैं. कहा जाता है कि उसी दौरान कुरान की एक आयत नाजिल हुई, जिसका अर्थ था, 'अल्लाह तुम्हें आदेश दे रहा है कि अमानत उन लोगों को लौटा दो, जिसकी है.' इसके बाद पैगंबर मोहम्मद फौरन इसका मतलब समझ गए और उन्होंने चाबी उस्मान बिन तल्हा को लौटा दी. जानकारी के मुताबिक, इसके बाद उस्मान ने इस्लाम कबूल कर लिया था. पैगंबर ने उन्हें बुलाकर कहा कि आज से चाबी तुम्हारे पास रहेगी. कोई और नहीं, बल्कि एक अत्याचारी तुमसे इसे छीन सकता है. उस्मान बिन तल्हा के निधन के बाद उनके चचेरे भाई शायबा को चाबी मिली और पीढ़ी दर पीढ़ी एक हाथ से दूसरे हाथ में ट्रांसफर होती आ रही है.

अब किसके पास है चाबी?

काबा की चाबी रखने वाले को 'सादीन' कहा जाता है. अभी शायबा के परिवार के सालेह-अल-शाइबी काबा के संरक्षक हैं और चाबी उन्हीं के पास है. अरब न्यूज के मुताबिक, अब तक 110 लोगों को काबा की देखभाल का सम्मान मिल चुका है. काबा की चाबी सोने की बनी है और बहुत हिफाजत से रखी जाती है. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, 14वीं सदी के बाद से चाबी बदली नहीं गई है. काबा से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक, चाबी इसलिए भी नहीं बदली गई है, क्योंकि डिजाइन में जरा सी हेर-फेर से ताला खोलने में परेशानी आ सकती है. वहीं, काबा के केयरटेकर कहते हैं कि चाबी बहुत खास है और डिजाइन आम चाबी से बहुत अलग है. इसको इस तरीके से बनाया गया है कि सिर्फ जिसके पास चाबी रहती है, वही इससे लॉक खोलना जानता है. उनके अलावा दूसरा कोई ताला नहीं खोल सकता है.

280 किलो का शुद्ध सोने का दरवाजा

काबा का मौजूदा दरवाजा भी सोने का है. सऊदी के मशहूर ज्वेलर अहमद बिन इब्राहिम ने किंग खालिद-बिन-अब्दुल-अजीज के कार्यकाल में इस दरवाजे को तैयार किया था. रिपोर्ट्स के मुताबिक, काबा का दरवाजा 280 किलो शुद्ध सोने का बना है.सऊदी गैजेट की एक रिपोर्ट के मुताबिक, काबा की गार्जियनशिप संभालने वाले का मुख्य काम गेट खोलना और बंद करवाना है. इसके अलावा साफ-सफाई और धुलाई जैसी चीजों की निगरानी भी शामिल है. काबा की धुलाई पवित्र जमजम और गुलाब के पानी से होती है. इसकी चारों दीवारें हर दिन सुगंधित पानी से साफ की जाती हैं और इस दौरान इबादत भी की जाती है.

बिना इजाजत शाही परिवार को भी एंट्री नहीं

अरब न्यूज के मुताबिक, यदि सऊदी के शाही परिवार का भी कोई सदस्य काबा आना चाहता है तो उन्हें भी शायबा परिवार से इजाजत लेनी होती है. सऊदी गैजेट के मुताबिक, रॉयल कोर्ट और मिनिस्ट्री ऑफ इंटीरियर ही शाही परिवार और शायबा परिवार के बीच को-ऑर्डिनेशन का काम करता है.

साइबर क्रिमिनल्स का नया हथकंडा है Cyber Kidnapping, खुद को ऐसे बचाएं

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , अगर हम आपसे पूछें कि किडनैपिंग क्या होती है तो आप तुरंत जवाब दे देंगे लेकिन क्या आप Cyber Kidnapping के बारे में जानते हैं? क्या आपने कभी साइबर किडनैपिंग के बारे में सुना या पढ़ा है, अगर नहीं तो आइए जानते हैं कि आखिर किस तरह से साइबर क्रिमिनल्स लोगों को ठगने के लिए इस पैंतरे को आज़मा रहे हैं.

किडनैपिंग के बारे में तो आप लोगों ने कई बार सुना और पढ़ा होगा लेकिन क्या आपने कभी वर्चुअल उर्फ Cyber Kidnapping का नाम सुना है? ज्यादातर लोगों का यही सोचना है कि आखिर साइबर किडनैपिंग कैसे मुमकिन है?

अगर आप भी साइबर किडनैपिंग से खुद को महफूज रखना चाहते हैं तो कुछ गलतियां हैं जिन्हें करने से आपको बचना होगा.हाल ही में अमेरिका के यूटा शहर से सामने आए साइबर किडनैपिंग के मामले ने सभी को चौंका दिया है. इस मामले के सामने आने के बाद ये कहना गलत नहीं होगा कि साइबर किडनैपिंग भी मुमकिन है. कौन-कौन सी गलतियां आपको करने से बचना है, इस बात को जानने से पहले ये जान लेना जरूरी है कि आखिर साइबर किडनैपिंग क्या बला है ?इसे आप फेक किडनैपिंग भी कह सकते हैं, क्रिमिनल्स को जब किसी से फिरौती के पैसे लेने होते हैं तो वह किसी भी शख्स के करीबी की फेक किडनैपिंग को प्लान करता है. साइबर उर्फ वर्चुअल किडनैपिंग में शख्स के पैरों और हाथों को बांधकर असली किडनैपिंग वाला सीन बनाकर तस्वीरें और वीडियो रिकॉर्ड की जाती है. इसके बाद शुरू होता है कि फिरौती मांगने का खेल.जिस व्यक्ति के साथ ठगी की जाती उस व्यक्ति को भेजी गई तस्वीरें और वीडियो फेक होती है, जहां तक बात रही आवाज की तो आवाज को डीप फेक टेक्नोलॉजी की मदद से कॉपी की जाती है.

इन 3 गलतियों को करने से बचें

पहली गलती, खुद को साइबर किडनैपिंग से बचाना चाहते हैं तो अनजान नंबर से आने वाले कॉल को भी न उठाएं.

दूसरी गलती, अगर कोई भी शख्स आपको आपके परिवार का सदस्य बनकर या फिर दोस्त बनकर किसी अनजान नंबर से कॉल करता है तो सावधान हो जाएं. कॉल कट करने के बाद अपने फोन से उनके नंबर पर कॉल मिलाकर वेरिफाई करें.

तीसरी गलती, सोशल मीडिया का जमाना है लेकिन यही सोशल मीडिया हम सभी के लिए आफत भी बन सकता है. हम कहीं भी जाते हैं तो वहां की तस्वीरें, वीडियो क्लिक कर सोशल मीडिया पर पोस्ट कर देते हैं, इसी डेटा का इस्तेमाल कर स्कैमर्स अपनी कॉल को और भी ज्यादा भरोसेमंद बनाते हैं. ऐसे में यही सलाह दी जाती है कि सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट करने से पहले 100 बार सोचिए.

फ्लैग ऑफ़कर डीजीपी अभिनव कुमार ने आरक्षी राजेन्द्र नाथ को दी शुभकामना

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 13 जनवरी , उत्तराखंड के पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार ने आरक्षी राजेन्द्र नाथ को दक्षिण अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी माउंट अकोंकागुआ के सफल आरोहण हेतु फ्लैग ऑफ किया। पुलिस मुख्यालय से आरक्षी राजेन्द्र नाथ को दक्षिण अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी माउंट अकोंकागुआ (6961 मीटर) को फतह करने के लिए पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार ने पुलिस प्रतीक चिन्ह देकर रवाना किया गया। आरक्षी राजेन्द्र नाथ द्वारा इसी एक्सपीडिशन के माध्यम से गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर माउंट अकोंकागुआ को फतह करने का प्रयास किया जाएगा।

इस अवसर पर पुलिस महानिदेशक ने आरक्षी राजेन्द्र नाथ को उनके सफल पर्वतारोहण अभियान के लिए शुभकामनाएं देते हुए बताया गया कि पर्वतारोहण एक साहसिक खेल है और SDRF के प्रत्येक सदस्य के लिए ऐसे साहसिक खेलों का विशेष महत्व है। इसलिए समय समय पर ऐसे साहसिक खेलों में प्रतिभाग करने हेतु कर्मियों को प्रोत्साहित किया जाता है। SDRF कर्मियों द्वारा क्याकिंग, राफ्टिंग, ट्रैकिंग, पर्वतारोहण इत्यादि साहसिक खेलों में प्रतिभाग कर अपनी व्यवसायिक दक्षता बढ़ाने का निरन्तर प्रयास किया जाता है।

फ्लैग ऑफ सेरेमनी के दौरान मौजूद पुलिस महानिरीक्षक SDRF द्वारा भी राजेन्द्र को शुभकानाएं प्रेषित की गई। इस दौरान विचार साझा करते हुए बताया गया कि SDRF में पर्वतारोहण का विशेष महत्व है। SDRF द्वारा सतोपंथ, भागीरथी,त्रिशूल व एवेरेस्ट का सफल आरोहण किया है। इन पर्वतारोहण अभियानों के माध्यम से मिले कौशल से SDRF द्वारा ग्लेशियरों एवम ट्रेक रूटों में फंसे देश-विदेश के अनेक पर्वतारोहियों,ट्रैकरों एवम पर्यटकों को सकुशल रेस्क्यू किया गया है। SDRF द्वारा विदेशी नागरिकों व पर्वतारोहियों के सफल रेस्क्यू कार्यों की कोरिया, अमेरिका इत्यादि देशों के दूतावासों द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई है।सेनानायक SDRF मणिकांत मिश्रा,ने जानकारी देते हुए बताया कि मुख्य आरक्षी राजेन्द्र नाथ SDRF की हाई एल्टीट्यूड रेस्क्यू टीम का एक अभिन्न अंग है। राजेन्द्र द्वारा विभिन्न पर्वत श्रंखलाओं पर किये गए सफल आरोहण से उच्च तुंगता क्षेत्रों में अपनी कार्यक्षमता में गुणात्मक सुधार किया गया बल्कि SDRF के अन्य कर्मियों को भी प्रेरित किया गया है। मुख्य आरक्षी राजेन्द्र नाथ के इस पर्वतारोहण अभियान के माध्यम से SDRF में एक साहसिक वातावरण का निर्माण करने का प्रयास किया जा रहा है जिससे अन्य जवान भी अभिप्रेरित होंगे व उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, जो निश्चय ही भविष्य में उच्च तुंगता रेस्क्यू के दौरान विषम परिस्थितियों में भय व अवरोधों का डटकर सामना करने का साहस प्रदान करेगा।आरक्षी राजेन्द्र नाथ द्वारा पूर्व में भी अनेक कीर्तिमान हासिल किये गए है। इनके द्वारा विगत वर्षों में चंद्रभागा-13 (6264 मीटर), डीकेडी-2 (5670 मीटर), माउंट त्रिशूल (7120 मीटर) माउंट गंगोत्री प्रथम (6672 मीटर), माउंट श्रीकंठ (6133 मीटर), माउंट बलज्यूरी (5922 मीटर), माउंट बंदरपूंछ (5500 मीटर), यूरोप महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी माउंट एलब्रुश(5642 मीटर), अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी माउंट किलिमंजारो (5895 मीटर) का सफलतापूर्वक आरोहण किया गया है। यह उतराखंड पुलिस के प्रथम कर्मी है जिन्होंने माउंट एलब्रुस को छः दिवस के अंतराल में डबल समिट और माउंट किलिमंजारो को तीन दिवस के अंतराल में डबल समिट करने का अद्वितीय कीर्तिमान अपने नाम किया है।

PM Modi ने अजमेर शरीफ दरगाह के लिए भेजी चादर

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर साल के भांति इस बार भी अजमेर शरीफ दरगाह पर उर्स के मौके पर चादर चढ़ाने के लिए भेंट की है. अजमेर शरीफ दरगाह एकता की मिसाल है और हिंदुस्तान की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक परंपरा की निशानी है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अजमेर शरीफ दरगाह पर चढ़ाने के लिए अल्पसंख्यक मोर्चा को चादर सौंपी है. इस चादर को ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के उर्स के मौके पर चढ़ाया जायेगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर साल अजमेर शरीफ दरगाह पर इसी तरह उर्स के मौके पर चादर भेंट करते हैं. हर साल की तरह इस साल भी उनकी भेंट की गई चादर को दरगाह पर चढ़ाया जाएगा.

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर साल के भांति इस बार भी गुरुवार (11 जनवरी) को अजमेर शरीफ दरगाह पर चादर चढ़ाने के लिए अल्पसंख्यक मोर्चा को भेजी है. ऐसे में पीएम मोदी ने यह चादर 13 जनवरी के दिन चढ़ाई जाएगी. और जब पीएम मोदी अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात तो उस दौरान अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री स्मृति ईरानी (Smriti Irani) भी मौजूद रहीं. इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर पोस्ट कर लिखा है कि मुस्लिम समुदाय के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की. हमारी बातचीत के दौरान, मैंने पवित्र चादर पेश की, जिसे ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के उर्स के दौरान प्रतिष्ठित अजमेर शरीफ दरगाह पर रखा जाएगा.

ऐसे में दिल्ली हज कमेटी की प्रमुख कौसर जहां (Kausar Jahan) भी इस मौके पर मौजूद थीं. और इस साल अजमेर शरीफ के दरगाह पर 812वां उर्स मनाया जा रहा है. जबकी प्रधानमंत्री मोदी ने अब तक 9 बार अजमेर शरीफ दरगाह को चादर भेंट करने के लिए सौंपी है. और इस बार अजमेर शरीफ दरगाह उर्स के मौके पर 13 से 21 जनवरी तक आयोजन किया जा रहा है.बता दें कि अजमेर शरीफ़ दरगाह भारत के राजस्थान राज्य के अजमेर नगर में स्थित है. यहां अजमेर में प्रसिद्ध सूफ़ी मोइनुद्दीन चिश्ती ख्वाजा गरीब नवाज (1141-1236 ई॰) की दरगाह है. जिसमें उनका मकबरा (समाधि) स्थित है.

संपादकीय

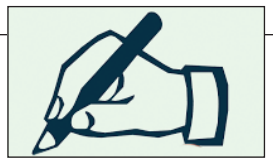

राम मंदिर से दूर क्यों कांग्रेस

अयोध्या में श्रीराम मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आमंत्रण अस्वीकार कर कांग्रेस ने धर्म को निजी मामला माना है, लेकिन उसकी आरोपिया दलीलें भी हैं कि 'अधूरे मंदिर' का उद्घाटन शास्त्र सम्मत नहीं है। यह आरएसएस-भाजपा का कार्यक्रम है और उन्होंने 'राजनीतिक लाभ' के लिए ऐसा किया है। कांग्रेस ने शंकराचार्यों द्वारा भी आमंत्रण अस्वीकार करने की आड़ ली है, जो अद्वधसत्य है। शंकराचार्य विजयेन्द्र सरस्वती की टीम प्राण-प्रतिष्ठा की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इसके अलावा, दो शंकराचार्यों ने अपनी स्वीकृति भेज दी है कि वे 22 जनवरी के पावन उत्सव में शामिल होंगे। शेष दो शंकराचार्यों के अपने कोई कारण होंगे, लेकिन उन्होंने प्रभु राम की प्राण-प्रतिष्ठा को खारिज नहीं किया है। कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं के लिए राम मंदिर समारोह 'अधूरे मंदिर की सियासत' है, लेकिन उप्र कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय के साथ जो 50 कांग्रेसी नेता मकर संक्रांति के अगले ही दिन अयोध्या की सरयू नदी में डुबकी लगाने और फिर 'राम लला' के दर्शन करने जा रहे हैं, उनके रामवाद और हिंदुत्व की परिभाषा क्या है? कांग्रेस के बड़े नेता कमलनाथ, अशोक गहलोत और गांधी परिवार के प्रिय आचार्य प्रमोद कृष्णम आदि की लंबी सूची है, जो चेतना से 'रामवादी' होने का दावा करते रहे हैं और प्रभु राम के दर्शन करने, अपनी सुविधा के अनुसार, अयोध्या धाम जाएंगे। कांग्रेस के भीतर यह विरोधाभास क्यों है? कांग्रेस ऐसे आध्यात्मिक और ऐतिहासिक समारोह का हिस्सा बने या राजनीतिक कारणों से बहिष्कार करे, यह उसकी सोच है। उससे हमारा कोई सरोकार नहीं, लेकिन वह 'आत्मघाती' साबित हो सकता है। समारोह को संघ परिवार का ही आयोजन करार देना पूर्णतः उचित नहीं है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनना चाहिए, यह सर्वोच्च अदालत की पांच न्यायाधीशों की पीठ का निर्णय था। संविधान पीठ ने ही प्रधानमंत्री मोदी को निर्देश दिए थे कि वह मंदिर-निर्माण के लिए एक ट्रस्ट का गठन करें। वह निर्णय कैबिनेट में लिया गया। यदि अयोध्या समारोह में भाजपा-विहिप के नेता, कार्यकर्ता सक्रिय दिख रहे हैं, तो उसमें क्या गलत है? संघ परिवार ने राम मंदिर के लिए बेहद लंबा संघर्ष किया है, आंदोलन में कारसेवकों ने 'कुर्बानियां' दी हैं। यदि इतने व्यापक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और उनकी सरकारी टीम शामिल नहीं होगी, तो आम बंदोबस्त से लेकर सुरक्षा-व्यवस्था की जिम्मेदारी किसकी होगी? यदि इन दिनों में कोई अनहोनी हो गई, तो किसकी जवाबदेही तय की जाएगी? प्रशासन और इन व्यवस्थाओं के लिए भाजपा को लोकतांत्रिक जनादेश मिला है। बहरहाल कांग्रेस ने राम मंदिर का बहिष्कार किया है, तो यह उसकी पुरानी आदत है। श्रीराम तो सबके हैं और सभी 'राममय' हैं। राम भाजपा-कांग्रेस के नहीं हो सकते। एक राजनीतिक कारण तो स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरी भारत के राज्यों में कांग्रेस के पक्ष में 50 फीसदी तक मुस्लिम वोट आते रहे हैं। औसतन सबसे अधिक मुसलमान कांग्रेस को ही वोट देते हैं। आखिर कांग्रेस 'मुस्लिम तुष्टिकरण' की निश्चित राजनीति को कैसे गंवा सकती है? हिंदुओं के वोट कांग्रेस के पक्ष में परंपरागत ही रह गए हैं।

दैनिक न्यूज़ वायरस

संपादक : मौ.सलीम सैफी, **कार्यकारी संपादक :** आशीष कुमार तिवारी न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मौ.सलीम सैफी द्वारा विश्वनाथ प्रिंटर्स, अजबपुर कलां, देहरादून से प्रकाशित एवं न्यूज़ वायरस नेटवर्क प्रा. लिमिटेड, 48/3 बलबीर रोड, डालनवाला, देहरादून से मुद्रित। **फ़ोन :** 0135-4066790, 2672002, **RNI No. :** UT-THIN/2012/44094
Cert. Ser. No. : 31406 **E-mail :** dainiknewsvirus@gmail.com
Website : www.newsvirusnetwork.com **YouTube :** TV News Virus
न्याय क्षेत्राधिकार : जनपद देहरादून (उत्तराखंड), भारत

सर्दियों में क्यों आती है ज्यादा नींद ?

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट , 13 जनवरी , सर्दियों के मौसम में आपको भी पूरा-पूरा दिन कंबल में घुस कर रहने का मन करता होगा। आलस के साथ ही सिर्फ सोने (Sleepy in Winter) का भी मन करता होगा। पर क्या आपने, सर्दियों में आलस और थकान क्यों लगता है कभी सोचा है। तो चलिए जानते हैं, सर्दियों में आलस और थकान का सबसे बड़ा कारण धूप की कमी है। स्वीडन में हुए एक रिसर्च में यह बात सामने आई है।

ठंड में होती है विटामिन डी की कमी

रिसर्च में बताया गया है कि सूरज की रोशनी कम होने के कारण हमारे बायोलॉजिकल क्लॉक पर असर पड़ता है। इससे मेलाटोनिन हार्मोन का उत्पादन बढ़ जाता है। यही हार्मोन हमारी नींद के लिए जिम्मेदार होता है। स्टॉकहोम यूनिवर्सिटी में के रिसर्चर्स ने बताया कि धूप की कमी के कारण शरीर में विटामिन D की कमी होने से हर समय थकान महसूस होती है। लोगों को सर्दियों में डिप्रेशन और तनाव की समस्या भी ज्यादा होती है।

तला-भुना खाना भी एक वजह

इसकी वजह सर्दियों के मौसम में ज्यादातर लोग ज्यादा तला-भुना खाना शुरू कर देते हैं। इससे हमारी शारीरिक गतिविधियों पर असर पड़ता है। रिसर्चर्स के अनुसार, सर्दियों में होने वाला अवसाद और तनाव फिजियोलॉजिकल डिसऑर्डर है। इसे सीजनल एफेक्टिव डिसऑर्डर कहते हैं। प्रोफेसर लॉडेन कहते हैं कि हमारे शरीर के लिए कम से कम 20 मिनट सूरज की तेज रोशनी मिलनी जरूरी है।

हार्मोन तय करते हैं नींद का पैटर्न

स्टॉकहोम यूनिवर्सिटी में नींद के मामलों का रिसर्च करने वाले अर्ना लॉडेन बताते हैं कि इंसान डायूरनल प्राणी है जो दिन के समय सक्रिय रहने और रात के समय नींद लेते हैं। सूरज की रोशनी ही हमारे दिमाग को मेलाटोनिन हार्मोन के प्रवाह को रोकने का संदेश देती है। मेलाटोनिन हार्मोन रात 8 बजे के करीब सक्रिय होता है। आधी रात में एक बजे के करीब सोने के दौरान ये चरम पर पहुंच जाता है। सुबह होने पर सूरज की रोशनी दिमाग को मेलाटोनिन हार्मोन बनाना बंद करने का मैसेज देती है।

क्या होता है विंटर ब्लूज़

द लाइटिंग रिसर्च सेंटर की मरियाना फिग्यूरो के अनुसार, कई लोग सर्दियों की लंबी रातों और छोटे दिन के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते हैं। इस कारण कई लोग डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। कुछ लोगों में कार्बोहाइड्रेट की ज्यादा इच्छा होने लगती है। इससे उनका वजन बढ़ने लगता है। इसे विंटर ब्लूज़ कहा जाता है।

Free का WiFi कितना सुरक्षित ?

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट 13 जनवरी : अगर आप अपने घर में Wi-Fi इस्तेमाल कर रहे हैं तो वो बेहद सुरक्षित है। इसके साथ ही अगर आप किसी भी रिश्तेदार, मित्र या जान पहचान वाले के घर में जाकर उसका Wi-Fi इस्तेमाल करते हैं तब भी वो सुरक्षित है। लेकिन जब बात पब्लिक Wi-Fi की आती है तो इसे पूरी तरह सुरक्षित नहीं कहा जा सकता। बाज़ार, मॉल, पार्क या किसी भी अन्य स्थान पर सार्वजनिक वाई फाई हमेशा सुरक्षित नहीं रहता।किसी भी सार्वजनिक स्थान पर मिलने वाला फ्री वाई फाई को कोई ना कोई कंपनी ही प्रदान करती है। ऐसे में जब आप उस वाई फाई को इस्तेमाल करने के लिए अपना पंजीकरण करते हैं तो तभी आपका नंबर,मेल आदि उस कंपनी के पास जाता है। अब इस जानकारी को कंपनी आगे बाज़ार में बेच भी सकती है।

ऐसे में साइबर अपराधी इस जानकारी का दुरुपयोग भी कर सकते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर मिलने वाले फ्री वाई फाई का इस्तेमाल करते हुए अक्सर लोग डिजिटल लेन देन भी शुरू कर देते हैं। लेकिन यही उनके लिए सेल्फ गोल बन जाता है। दरअसल हैकर्स इसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे होते हैं, कि लोग आए और अपने उस wifi का इस्तेमाल कर अपने फोन से लेन देन शुरू करें ताकि वो उन्हें अपना शिकार कर सकें। लोग अक्सर अपने फोन का रिचार्ज, बिजली-पानी का बिल, किसी को पेमेंट करना आदि काम उस वाई फाई पर कर देते हैं। इसी दौरान हैकर्स उन्हें चूना लगा कर, उनका बैंक अकाउंट खाली कर देते हैं।सबसे पहले तो फ्री वाई फाई को इस्तेमाल करते हुए उसके नियम और शर्तों को ध्यान से पढ़ लें। डिजिटल लेन देन ना ही करें तो बेहतर है क्योंकि इससे उन्हें आपके बैंक खातें तक पहुँचने में और भी आसानी हो जाती है। इसके साथ ही लंबे समय तक फ्री में मिलने वाले वाई फाई का इस्तेमाल ना करें क्योंकि इससे खतरा ज्यादा बढ़ सकता है।

राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी मिनिस्टर सौरभ बहुगुणा की अहमियत

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून , 13 जनवरी , भाजपा ने उत्तराखंड में लोकसभा चुनाव की तैयारियां तेज कर दी हैं। नमो एप विकसित भारत एंबेसडर अभियान और संगठन के लोकसभा से संबंधित कार्यक्रम तय करते हुए पांचों सीटों को दो कलस्टर में बांटते हुए, कैबिनेट मंत्रियों को उसका प्रभारी बनाया गया है। इसमें सबसे बड़ी अहमियत दी गयी है शानदार कार्यशैली जनता से जुड़ाव और पार्टी कार्यकर्ताओं में बढ़ती लोकप्रियता बनाने वाले युवा मिनिस्टर सौरभ बहुगुणा को जिन्हे सीएम धामी का बेहद भरोसेमंद साथी भी माना जाता है।

कुमाऊं की दो सीटों के केंद्र हल्द्वानी की जिम्मेदारी मंत्री सौरभ बहुगुणा को

प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने बताया कि केंद्रीय योजना के तहत राज्य को दो कलस्टरों में बांटा गया है । जिसमे गढ़वाल मंडल की 3 लोकसभा सीटों का केंद्र देहरादून का प्रभारी कैबिनेट मंत्री डाक्टर धन सिंह रावत को बनाया गया है और कुमाऊं की दो सीटों के केंद्र हल्द्वानी की जिम्मेदारी मंत्री सौरभ बहुगुणा को दी गई है। उनके सहयोग के लिए सह प्रभारी एवं लोकसभा प्रभारी, सहप्रभारी संयोजक के नामों को घोषणा शीघ्र की जाएगी। सर्वप्रथम कलस्टर स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा, गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के कार्यक्रम प्राप्त होंगे, जिसको लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

कुमाऊं की दो सीटों के केंद्र हल्द्वानी की जिम्मेदारी मंत्री सौरभ बहुगुणा को

नमो एप पर जारी विकसित भारत एंबेसडर 100 दिवसीय चैलेंज को संगठन स्तर पर गति दी जा रही है। जिसका उद्देश्य राष्ट्र की सामूहिक शक्ति का उपयोग करना, विकास के एजेंडे को मजबूत करना ओर विकसित भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए 140 करोड़ भारतीयों की सहभागिता सुनिश्चित करना है। इस अभियान का दूसरा चरण 25 दिसंबर से 25 जनवरी तक पार्टी के विभागों, प्रकोष्ठों एवं मोर्चों द्वारा मंडल स्तर पर चलाया जा रहा है। अब पार्टी ने युवा सौरभ को इस बड़ी ज़िम्मेदारी के मिलने से जहां युवाओं में जोश बढ़ा है वहीँ मिनिस्टर सौरभ बहुगुणा ने भी केंद्र और पार्टी लीडरों की उम्मीद पर खरा उतरते हुए सभी 5 सीटों को बम्पर रिकॉर्ड से जीतने का भरोसा जताया है।

अब तक कुल 2 लाख 43 हजार 180 लोग विकसित भारत एंबेसडर के तहत नमो एप को डाउनलोड कर चुके हैं और जिसमे 2 लाख 27 हजार 1 सौ तिरासी लोग इस अभियान में पूर्णतया सक्रिय हैं। इस चरण में 7-8 जनवरी को सभी स्तरों पर प्रत्येक कार्यकर्ता को कम से कम 10 विकसित भारत एंबेसडर को नामांकित किया गया। 9-10 जनवरी को युवा मोर्चा व महिला मोर्चा ने विकसित भारत एंबेसडर चैलेंज के लिए शैक्षणिक संस्थानों, कोचिंग सेंटरों, सामुदायिक केंद्रों आदि में जागरूकता अभियान चलाया।

2025 तक जैविक खेती को 50 प्रतिशत किया जाएगा : मंत्री गणेश जोशी

न्यूज़ वायरस नेटवर्क

देहरादून 13 जनवरी : प्रदेश के कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने देहरादून के एक निजी होटल में एपिडा द्वारा उत्तराखण्ड के उत्पादों के एक्स्पोर्ट को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित एक दिवसीय इंटरनेशनल कॉन्क्लेव कम बायर सेलर कार्यशाला का दीप प्रज्जनलन कर शुभारम्भ किया। कृषि मंत्री गणेश जोशी ने देश और विदेश से पहुंचे लोगों का शॉल ओढ़ाकर एवं पहाड़ी टोपी पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यशाला में देश - विदेश के आयातक और क्रेता-विक्रेता, प्रदेश के कृषक, एफपीओ सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर मंत्री गणेश जोशी ने उत्तराखण्ड के प्रथम निर्यात ऑर्गेनिक उत्पादों फल सब्जियों के वाहन को किंगडम ऑफ बहरैन के लिए रवाना किया।

इस अवसर पर कृषि एवं उद्यान मंत्री गणेश जोशी ने अपने संबोधन में कहा उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं कृषि जलवायु विभिन्न औद्यानिक फसलों (फल, सब्जी, मसाला, पुष्प, मौनपालन तथा मशरूम) के उत्पादन के लिए अत्यधिक अनुकूल है। उन्होंने पिछले 05 वर्षों में प्रदेश ने जैविक खेती के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छुआ है, जहां 2017 से पहले प्रदेश के कुल कृषि क्षेत्र का 1 या 2 प्रतिशत क्षेत्र में ही जैविक खेती होती थी। वही अब 38 प्रतिशत क्षेत्र में जैविक कृषि की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार का संकल्प है कि वर्ष 2025 तक जैविक खेती को 50 प्रतिशत किया जाएगा।

पिछले 05 वर्षों में प्रदेश ने जैविक खेती के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छुआ

उन्होंने कहा अभी राज्य के 10 विकासखण्ड पूर्ण जैविक घोषित किए जा चुके है, अगले वर्ष तक अन्य 10 नए विकासखण्डों को भी जैविक घोषित किया जाएगा और हमारा प्रयास रहेगा कि प्रदेश के समस्त 11 पर्वतीय जनपदों को पूर्ण जैविक जनपदों में परिवर्तित किया जाए।

उन्होंने कहा प्रदेश में उत्पादित हो रहे जैविक उत्पादो के विपणन में सहयोग के लिए जैविक उत्पाद परिषद कार्यरत है तथा देश विदेश में उत्तराखण्ड के जैविक उत्पादो के विपणन के

प्रोत्साहन के लिए मेले व प्रदर्शनियो के माध्यम से केताओ को आमंत्रित कर जैविक उत्पादो का विपणन किया जा रहा है, इसी कड़ी में प्रदेश में जैविक उत्पादो के स्थानीय विपणन को प्रोत्साहित करने के लिए जैविक आउटलेट खोले जा रहें है, जो राज्य के प्रत्येक कस्बे, शहर के मुख्य बाजार, यात्रा मार्ग, चार धाम मार्ग पर स्थित होगे, जहां किसान समूह अपने जैविक उत्पादो को सीधे उपभोक्ता को बेचेगा और बिचौलियो को मिलने वाला लाभ भी अब सीधे किसानो को ही मिलेगा।प्रदेश में जैविक उत्पादो के प्रोत्साहन के लिए जैविक कृषि अधिनियम लागू किया जा चुका है। उन्होंने कहा प्रदेश के कृषि श्रेणी के 15 स्थानीय उत्पादो को जी आई टैग प्राप्त हो चुके है। जिनमे मुनस्यारी की राजमा, पुरोला का लाल धान, गहत, तोर दाल, चौलाई, पीली मिर्च आदि शामिल है। ऐसे जीआई उत्पादों को प्रोत्साहित करने और इस क्षेत्र में अधिक प्रयास करने के लिए प्रदेश में अलग से जीआई बोर्ड का गठन किया जा रहा है।

कृषि मंत्री ने कहा उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के समय से ही प्रदेश को एक जैविक राज्य के रुप में विकसित किए जाने के लिए अनेक कदम उठाए जा रहे है, जिसके माध्यम से कृषको की आय को बढाए जाने का प्रयास किया जा रहा है तथा प्रदेश विभिन्न गुंणवत्तायुक्त स्थानीय उत्पादो को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में पहचान दिलाई जा रही है। उन्होंने कहा प्रदेश की बासमती, लाल मिर्च, औषधीय एवं सगन्ध पौधे, चौलाई, सोयाबीन, मंडुआ, झंगोरा, लाल चावल आदि उत्पादो ने लोगो के भोजन में अपनी खास जगह बना ली है, जिससे दिन प्रतिदिन इनकी मांग बढ रही है। उन्होंने कहा सेब की अति सघन बागवानी के लिए कम क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए कृषकों की आय में गुणात्मक वृद्वि हेतु सेब की अति सघन बागवानी को बढ़ावा देते हुए कृषकों को 60 प्रतिशत राज सहायता पर आगामी 08 वर्षों में 5000 सेब के अति सघन बागान स्थापित कराये जायेगें।

जिसके अन्तर्गत लगभग कुल रू0 808.79 करोड़ व्यय किया जायेगा, जिससे लगभग 45,000 से 50,000 रोजगार सृजन होंगे। वर्तमान में लगभग 43328 मै०टन सेब का उत्पादन किया जा रहा है। उन्होंने कहा प्रदेश में जैविक खेती के साथ साथ प्रधानमंत्री जी की महात्वाकांक्षी योजना प्राकृतिक खेती को भी प्रदेश में वृहत स्तर पर संचालित किया जाएगा, जिसमें प्रथम चरण में इसी वर्ष से 6400 हैक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती की कार्ययोजना को स्वीकृत किया जा चुका है। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था आने वाला दशक उत्तराखंड का होगा। उन्होंने कहा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में प्रदेश आज नए नए आयाम स्थापित कर रहा है। मिलेट्स मिशन का संचालन किया जा रहा है। जिसके लिए 73 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। उन्होंने आयोजकों को कार्यक्रम के लिए बधाई दी और कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा एपीडा भारत सरकार द्वारा आयोजित आज की कार्यशाला के माध्यम से प्रदेश के कृषकों के जैविक उत्पादों के कय के लिए बड़ी संख्या में खरीददार उत्तराखण्ड में आयेगें। इससे जहां प्रदेश के कृषकों को उनके जैविक उत्पादों का अधिक मूल्य मिलेगा साथ ही अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में पहचान मिलेगी।